

श्री शंकराचार्य सुप्रभातम्

श्री शिवाय गुरवे नमः

अज्ञानध्वांत सूर्याभां शारदा रूपिणीं शुभाम्
ज्ञानप्रदां स्मराम्यंवां सर्वशक्तिमयीं सदा ॥ १ ॥

आचार्यवर्य करुणामय मोक्षदायिन्
अज्ञानजाड्य तिमिरापह दिव्यगात्र
प्रारब्धकर्मसुविमोचन ज्ञानराशे
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ २ ॥

सर्वार्थसाधक, सदाशिव शांतमूर्ते
तेजोमयार्तिहर तात्त्विक मार्गदर्शिन्
पीयूषवर्षि परिपूर्णमुखेंदुबिंब
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

दारिद्र्यनाशन दयामय दीनबंधो
धर्मस्वरूप धृतषण्मत धर्म संस्थ
श्री भारती विजय लब्धयशो विशाल
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

श्री व्यासनिर्मित महोज्वल सूत्रभाष्य
निर्माण संगति धुरीण लसत्प्रभाव

ज्ञानप्रदान चणपादपयोजयुग्म

ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

आज्ञावशंवद रमा करुणाकटाक्ष

भूमाप्रदान गुणसिद्ध गुरुस्वभाव

आर्याविकातनय बंधविमोचकस्य

ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

जन्मादि दुःख विनिवारण भक्तपोष

देहात्मधी भ्रमनिवारक ज्योतिरूप

श्री कालटी जनन शिष्य हृदयवास

ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

ब्रह्मण्यदेव तवशांत मुखारविंद

सन्दर्शनेन कलुषाऽनभिभूत चित्ताः

सच्चित्तयोगमुपयांतिनराः क्षणेन

त्वद्दर्शनं सुकृतिनां खलु जायतेहि ॥ ८ ॥

धी लक्ष्ययुक्त बुधसेविन भावगम्य

वैराग्य भाग्य वरदाभय पाणिपद्म

सर्वज्ञ पीठसमधिष्ठत पादपद्म

ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

श्री दक्षिणाभिमुखदेव महेश शंभो
विश्वार्तिभंजन विवेकि जनालिवंद्य
ब्रह्मादि देवगणमानित मंत्रशक्ते
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १० ॥

ध्यायामि नित्यमनवद्य पदद्वयं ते
कैवल्यदायि कमलामल कांतिकांतम्
साक्षाच्छिवात्मकममेय महानुभाव
श्री सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

भो, पूज्यपाद वृषभाचलवास विश्व
स्यात्म स्वरूप सदसद्गुणसारगम्य
अद्वैत राज्य परिपालक संयमिंद्र
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

सत्पंडितेड्य धृतदंड कमंडलु श्री
हस्ताब्जदिव्य पदपंकज पाहि पाहि
भावं प्रभोध्य भवबंध विमोचकस्य
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १३ ॥

बालं विशुद्ध परमात्मरतिं सुधीरं
दृष्ट्वा करामलक सार्थक नामधेयं
कृत्वा स्वशिष्यमधिकं मुदितोसितस्य
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १४ ॥

सद्ब्रह्मचर्य गुरुसन्निधिवासकाले
भिक्षाटनाय गृहिणोऽधिक भक्तिभाजः
रिक्तस्य गेहमकरोः कमलानिवासं
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १५ ॥

तद्वेश्मयत्स्व यमुपेयुषि दीनबंधौ
त्वय्यादरेण गृहिणीकिल सा द्विजस्य
धात्रीफलं किमपि दत्तवतीहि तुभ्यं
ते सार्वभौम गुरुशंकर सुप्रभातम् ॥ १६ ॥

श्री पद्मपाद मुनिसेवित पादपद्म
सत्तोटाभिध सुशिष्य गुणालि तृप्त
सत्सेवकोत्तम करामलकादियुक्त
बुद्धि प्रधान बुधवर्य सुरेश्वरास्त ॥ १७ ॥

व्याघ्राजिनस्थ गुरुपुंगव शर्मदायिन्

त्वत्सेवया विदितं शांतिरसाति शुद्धान्
भक्तिप्रभावचतुरांस्तव शिष्यमुख्यान्
ध्यायामि चेतसि ममात्मविकाससिद्धौ ॥ १८ ॥

शंकाकळंकपरिहारककिंकराणां
प्राग्जोतिरादिसुविसारिविभाविशेष
प्राभाकरादिघनपंडितसेवितांग्रे
ते सार्वभौमगुरुशंकरसुप्रभातम् ॥ १९ ॥

संसारपंकपरिशोषणतीक्ष्णरश्मे
तापत्रयाकुलजनौघसुखप्रदातः
साम्राज्यपालनसुधन्वनृपालशास्तः
ते सार्वभौमगुरुशंकरसुप्रभातम् ॥ २० ॥

सर्वापदुद्धरणसांद्रदयारसाब्धे
सान्निध्यवर्तिहितशिष्यसमाहितात्मन्
भाष्यार्थबोधनविधानकलाप्रवीण
ते सार्वभौमगुरुशंकरसुप्रभातम् ॥ २१ ॥

तुंगांबुशीकरकणैशिशिशिरेनृनारी
संदोहरंजितझषप्रकरप्रमोदे

हंसावळी शुकपिकादि विकूजितैश्च

रम्ये पवित्र भुविशृंगगितौ विशालम् ॥ २२ ॥

निर्माय सुंदर शिलाकृत शिल्पजालैः

प्रासादमद्भुत विमान विशेषमग्न्यम्

संपूज्य दिव्यमणि भूषण भूषितांगीं

श्री शारदां प्रमुदितामकरोस्त्व मंभाम् ॥ २३ ॥

तत्राद्यपीठ गुरुयोग्य पदेनिवेश्य

श्रीमत्सुरेश्वर यतीश्वर मात्मतुल्यम्

भाष्यादि वार्तिक मुखानपि कारयित्वा

तुंगाप्रशस्त पुलिने खलु तेन भासि ॥ २४ ॥

ध्यायामि संशय विदारण धी विशालं

तं सद्गुरुं शिवगुरोः प्रिय पुत्ररत्नम्

धीमंतमांतर गुहानिलयं नितांतं

श्री शंकरार्य गुरुवर्यमहं हि सिद्ध्यै ॥ २५ ॥

ये मानवास्सतत माश्रमिण स्समस्त

मूर्ति प्रकाशन गुरु परमार्थ बुद्ध्या

ध्यायंतिते तत महोद्धत दुःखवार्धि

संतारणेननितरां मुदिता भवन्ति ॥ २६ ॥

रागादिरोग परिशोषण भेषजं तं
योगादि भूषण विवर्धित देहकांतिम्
शिष्यालि सेवित मनोज्ञ पदांबुजातं
श्री वेद वारिनिधि पूर्ण शरत्सुधांशुम् ॥ २७ ॥

सेवेद्य संसृति दवानल तापशांत्यै
श्री शंकरार्य इति पूजितनामधेयम्
अद्वैत तत्त्व महिमोन्नति मूर्तिमंतं
विश्वैक शांति सुख दान विधान शीलम् ॥ २८ ॥

चंद्रार्कवायु सलिलाग्नि वियत्सुधीज्या
मूर्त्या समस्त जगतां परिपालकं तम्
फाले विराजदति दिव्य महा प्रकारशम्
ध्यायामि श्री शिवगुरुं ममबुद्धिकोशे ॥ २९ ॥

यो मंदधीर्गिरिरिति प्रथितोति भक्त
शिष्यस्त्वदीय करुणार्द्रदृशैव सद्यः
स्तुत्याकुशाग्रधिषणो भुवितोटकारव्य
वृत्तैस्सतोटक इति प्रथितो बभूव ॥ ३० ॥

भो शंकरार्य, मुनिवर्य, श्रुतिप्रशस्त
दीव्यद्गुणाढ्य विदिताखिल शास्त्र तत्त्व
अज्ञान रात्रि मिहिराखिल लोकबंधो
ब्रह्माद्वयैक रसपूर्ण निगूढ तत्त्व ॥ ३१ ॥

सर्वांग तापक भवाभिद दीर्घरोग
संहारकामृत महौषधि रूपनित्यम्
सेवां त्वदीय पदपंकज भक्तिरूपां
कृत्वाथवंदन शतानि समर्पयामि ॥ ३२ ॥

श्री शंकराखिलगुरो तव सुप्रभात
मित्थं सुबोधवचसा रचितं मया यत्
त्वत्प्रेरणैव तवमे न गुणोपि दोषः
त्वत्कारितं कृतवतस्त्वदनुग्रहेण ॥ ३३ ॥

फलश्रुति

भक्त्याहि येभुवि जगद्गुरु सार्वभौम
श्री सुप्रभात विनुतिं मनुजाः पठन्ति
तेयांति शान्ति सुखलक्ष्य विदोखिलार्थान्
मुक्तिं च शंकर गुरोस्सदनुग्रहेण ॥ ३४ ॥

इति श्री शंकराचार्य सुप्रभातस्य कीर्तनात्

मोहभ्रांति विमुक्तास्युस्स्वयमेव न संशयः ॥ ३५ ॥

ध्यायामो भगवत्पाद शंकरं करुणालयम्

सुख शांति मनोभीष्टसिद्धिदं शुद्धं बुद्धिदम् ॥ ३६ ॥

श्री शंकर भगवत्पाद चरणारविंदार्पणमस्तु

श्री शंकर भगवत्पादास्तृप्यंतु

इति श्री श्री विश्वेश्वरानंद भारती स्वामि कृतिषु

श्री शंकराचार्य सुप्रभातम्